दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB PRT, TGT & PGT
ROJGAR
With
ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
आधुनिक काल
LIVE
24-06-2024 09:00 AM

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल 'भारतीय इतिहास' के बदलते हुए स्वरूप से काफी प्रभावित था। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम' और राष्ट्रीयता की भावना का प्रभाव भी साहित्य में आ गया था। भारत में औद्योगीकरण का प्रारम्भ होने लगा था। अंग्रेजी और पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ा और जीवन में बदलाव आने लगा। ईश्वर के साथ-साथ मानव को महत्त्व दिया जाने लगा था । भावना के साथ-साथ विचारों को पर्याप्त प्रधानता मिली। पद्य के साथ ही गद्य का भी पर्याप्त विकास हुआ और छापेखाने के आते ही साहित्य के संसार में एक नई क्रान्ति का बीजारोपण हुआ ।

आधुनिकाल जिसकी विशिष्टता को परिलक्षित करके आचार्य शुक्ल ने उसे ठीक ही गद्य - काल नाम दिया है जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रवर्तित माना जाता हैं। मनुष्य की अवधारणा के रूप हिन्दी साहित्य के इतिहास में कई बार बदले हैं, और इसी के साथ परम तत्व को लेकर उसके रिश्ते भी। आदिकाल में मनुष्य का ईश्वर की महिमा से मुक्त रूप में वर्णन हुआ है, जबकि भक्तिकाल में यह चित्रण ईश्वर का मनुष्य के रूप में हुआ है। इसके पश्चात् रीतिकाल में ईश्वर और मनुष्य दोनों का मनुष्य रूप में चित्रण हुआ। आधुनिक काल में आकर मनुष्य सारे चिन्तन का केन्द्र बनता है और ईश्वर की धारणा व्यक्तिगत आस्था के रूप में स्वीकृत होती है। साहित्य या कलाओं में उसका चित्रण प्रासंगिक नहीं रह जाता है।

इसी का परिणाम यह देखा जा सकता है कि प्रेम और भक्ति लौकिक और अलौकिक सम्बन्ध, जो अभी तक या तो अलग-अलग अनुभव थे या कभी-कभी एक-दूसरे का संस्पर्श करते थे। अब उनका अन्तर आधुनिक काल में आकर विलीन हो गया है।

भारतेन्दु युग (1850 1885)

हिन्दी क्षेत्र में पुनर्जागरण की पहली सशक्त अभिव्यक्ति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व में मिलती है। इसीलिए इसे भारतेन्दु युग भी कहते हैं।

भारतेन्दु के पहले, ब्रज भाषा में भक्ति और श्रृंगार परक रचनाएँ होती थी और लक्षण ग्रन्थ भी लिखे जाते थें।

भारतेन्दु के समय से काव्य के विषय चयन में व्यापकता और विविधता आई। शृंगारिकता रीतिबद्धता में कमी आई। राष्ट्र प्रेम, भाषा-प्रेम और स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम कवियों के मान में भी पैदा होने लगा ।

उनका ध्यान सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान की ओर भी गया। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्रों में गतिशील नवजागरण को अपनी रचनाओं के द्वारा प्रोत्साहित किया।

इस काल की कविता की मुख्य प्रवृति देश - भक्ति हैं। इसमें ब्रिटिश शासकों की गुलामी के साथ-साथ देश की दशा सुधारने की प्रार्थना भी हैं - "कहाँ करुणानिधि केशव सोए ?

जानत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए। " (भारतेन्दु)

भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि

भारतेन्दु जी के साथ-साथ इस युग के प्रमुख कवियों का विवरण इस प्रकार हैं-

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-1885)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितम्बर, 1850 को बनारस के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। सिर्फ पैंतीस वर्ष की उम्र पाने वाले भारतेन्दु की अनेक विधाओं पर पकड़ थी। वे एक गद्यकार, कवि, नाटककार, व्यंग्यकार और पत्रकार थे। खड़ी बोली में

नाटक लिखकर भारतेन्दु ने हिन्दी नाटकों को नया आयाम दिया। भारतेन्दु के नाटक लिखने की शुरुआत बांग्ला के विद्यासुन्दर नाटक के अनुवाद से हुई। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में आधुनिक काल के अन्तर्गत गद्य-साहित्य-परम्परा का प्रकरण खोलते हुए रामचन्द्र शुक्ल भारतेन्दु के कृतित्व में नाटक की केन्द्रीय स्थिति को सही पहचानते हैं, पर एक विस्मय का भाव प्रकट करते हुए वे लिखते है "विलक्षण बात यह है कि आधुनिक गद्य-साहित्य की परम्परा का प्रवर्त्तन नाटकों से हुआ | " भारतेन्दु के बारे में कहा जा सकता है कि वे ऐसे भक्त थे, जो समकालीन राजनीति पर पूरी दृष्टि रखते थे और उनकी रचना इस पूरी स्थिति में से निष्पन्न होती है।

एक ओर श्री ' चन्द्रावली' नाटिका है, जिसमें चन्द्रावली के माध्यम से लेखक ने अपनी ही 'प्रेमाभक्ति' को निष्ठापूर्ण अभिव्यक्ति दी है, जिसमें केवल नारी पात्र हैं, कृष्ण भी रंगमंच पर जोगिन के वेष में आते हैं। दूसरी ओर 'मुद्राराक्षस' का रुपान्तर है जिसमें नारी पात्रों का

प्राय: एकान्त अभाव हैं और जहाँ कूटनीति के दाँव-पेंच पूरी जटिलता में अंकित हुए हैं। इन दोनों को मिलाकर भारतेन्दु का संश्लिष्ट व्यक्तित्व बनता है, जो पुनर्जागरण चेतना के अनुरूप हैं।

भारतेन्दु के रचनाकार- व्यक्तित्व की संश्लिष्टता उनके काव्य-रूपों के चुनाव में पूरी तरह झलकती हैं। वे हृदय से कवि हैं, पर उनकी कविता ब्रजभाषा में हैं, और अधिकतर भक्तिकालीन संस्कारों से युक्त, बीच-बीच में कुछ रीतिकालीन भंगिमा भी दिख जाती हैं। नवोन्मेष के दबाव मे अपवाद स्वरूप कुछ कविताएँ खड़ी बोली में लिखी हैं, तब छंद-विधान अधिकतर उर्दू का हैं। गद्य सारा का सारा खड़ी बोली में है। नाटक उनके कृतित्व के केन्द्र में हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रमुख रचनाएँ

नाटक - यह दो प्रकार के हैं - मौलिक एवं अनूदित ।

इनकी रचनाओं में नाटक, मौलिक एवं अनुदित निबन्ध, काव्य, कहानी, यात्रा वृतांत, आत्मकथा एवं उपन्यास मुख्य हैं।

मौलिक नाटक

(i) वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (प्रहसन) 1873

सामाजिक धार्मिक विसंगति पर व्यंग्य |

(ii) सत्य हरिश्चन्द्र (1875)

(iii) प्रेम जोगिनी (नाटिका) 1875

काशी के धर्माडम्बर का छायाचित्र |

(iv) विषस्य विषमौषधम् (भाड़, एक पात्रीय नाटक) 1876

बड़ौदा के गायकवाड़ के गद्दी से उतारे जाने तथा सयाजी राव के उनके स्थान पर बिठाए जाने की घटना पर आधारित।

(v) चन्द्रावली (नाटिका) 1876

वैष्णव भक्ति और प्रेमतत्व का चित्रण।

(vi) भारत - दुर्दशा (नाट्य रासक) 1880

भारतवर्ष के तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण व अंग्रेजी राज्य की अप्रत्यक्ष निन्दा

(vii) नीलदेवी (गीतिरूपक) 1881

राजपूतानी आनबान एवं नारी व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा।

(viii) अंधेर नगरी (प्रहसन) 1881

राजा की मूर्खता, अन्याय और अंधेर गर्दी पर तीखा व्यंग्य |

(ix) सती प्रताप (पौराणिक) 1883

सावित्री - सत्यवान के पौराणिक आख्यान पर आधारित।

अनूदित नाट्य रचनाएँ

(i) रत्नावली (1868)

'हर्ष' द्वारा रचित संस्कृत नाटक 'रत्नावली नाटिका' का अनुवाद।'

(ii) विद्या सुन्दर (1868)

संस्कृत नाटक 'चौरपंचाशिका' के 'यतीन्द्र मोहन ठाकुर' कृत बंग्ला संस्करण का हिन्दी अनुवाद

(iii) पाखण्ड विडम्बन (1872)

'कृष्ण मिश्र ' कृत संस्कृत नाटक 'प्रबोध चन्द्रोदय' के तृतीय अंक का अनुवाद

(iv) धनंजय विजय (1873)

कांचन कवि' कृत संस्कृत नाटक का अनुवाद |

(v) कर्पूर मंजरी (1875)

'राजशेखर' कवि कृत प्राकृत नाटक का अनुवाद

(vi) सत्य हरिश्चन्द्र (1875)

'क्षेमेश्वर' द्वारा रचित बंग्ला नाटक 'चण्ड कौशिक का अनुवाद

(vii) भारत जननी (1877)

बंग्ला की 'भारतमाता' के हिन्दी अनुवाद पर आधारित।

(viii) मुद्रा राक्षस (1878)

विशाखादत्त के संस्कृत नाटक का अनुवाद |

(ix) दुर्लभ बन्धु (1880)

शेक्सपियर के अंग्रेजी नाटक 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद |

प्रमुख निबन्ध

कश्मीर-कुसुम, उदय पुरोदय, कालचक्र, बादशाह दर्पण, लेवी प्राण लेवी, तदीयसर्वस्व, जातीय संगीत, नाटकों का इतिहास, वैद्यनाथ की मात्रा, स्वर्ग में विचार सभा, जाति विवेचनी सभा, पाँचवें पैगम्बर, अंग्रेज स्तोत्र, कंकड़ स्तोत्र, वैष्णवता और भारतवर्ष, हिन्दी भाषा, सूर्योदय, एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न, भ्रूण हत्या, रामायण का समय, काशी, मणिकर्णिका, संगीत सार, नाटक।

काव्य कृतियाँ

भक्ति सर्वस्व प्रेम मालिका, कार्तिक स्नान, वैशाख माहात्म्य, प्रेम सरोवर, प्रेमाश्रुवर्षण, जैन कुतूहल, प्रेम माधुरी, प्रेमतरंग उत्तरार्द्ध भक्तमाल, प्रेम प्रलाप, सतसई शृंगार, मधु - मुकुल, राग संग्रह, वर्षा विनोद, विनय प्रेम पचासा, फूलों का गुच्छा, प्रेम फुलवारी, कृष्णचरित, चतुरंग, उरेहना, तन्मय लीला, बकरी विलाप, प्रबोधिनी, भारत भिक्षा, रिपुनाष्टक, जातीय संगीत।

कविताएँ	शैल छन्द
बन्दर सभा	पैरोडी
उर्दू का स्यापा	स्यापा
समधिन मधुमास	गाली
वर्षा विनोद	लावनी
प्रातः समीरन	पयार
नए जमाने की मुकरी	मुकरी

कहानी : अद्भुत अपूर्व स्वप्न

यात्रा वृतांत : (i) सरयू पार की यात्रा

(ii) लखनऊ

आत्मकथा : एक कहानी – कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

उपन्यास : पूर्ण प्रकाश, चन्द्रप्रभा

राधा चरण गोस्वामी

हिन्दी के भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकार जिन्होंने ब्रजभाषा समर्थक कवि, निबन्धकार, नाटककार, पत्रकार, समाज सुधारक, देश प्रेमी आदि भूमिकाओं में भाषा, समाज और देश को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों की अनेक दिशाएँ हैं। वे कवि थे किन्तु हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं की श्रीवृद्धि भी उन्होंने की। इन्होंने राधाकृष्ण की लीलाओं, प्रकृति - सौन्दर्य और ब्रज संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर काव्य-रचना की।

प्रेमचन्द के पूर्व ही गोस्वामी जी ने समस्यामूलक उपन्यास लिखकर हिन्दी में नई धारा का प्रवर्तन किया।

प्रमुख उपन्यास

बाल विधवा (1883),

सर्वनाथ (1883),

अलकचन्द (1884)

अपूर्ण विधवा विपत्ति (1888),

जावित्र (1888),

वीरबाला (1883) ऐतिहासिक

बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रेमघन की रचनाओं का क्रमशः तीन खण्डों में विभाजन किया जाता है।

(1) प्रबन्ध काव्य (2) संगीत काव्य (3) स्फुट निबन्ध ।

वे कवि ही नही उच्च कोटि के गद्य लेखक और नाटककार भी थे। गद्य में निबन्ध, आलोचना, नाटक, प्रहसन लिखकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का बड़ी पटुता से निर्वाह किया है।

प्रेमघन का काव्यक्षेत्र विस्तृत था। वे ब्रजभाषा को कविता की भाषा मानते थे। "बेसुरी तान" शीर्षक लेख में आपने भारतेन्दु की आलोचना करने में भी चूक न की।

(i) जीर्ण - जनपद

(ii) आनन्द अरुणोदय

(iii) हार्दिक हर्षादर्श

(iv) मयंक महिमा

(v) अलौकिक लीला

(vi) 'वर्षा बिन्दु

(vii) लालित्य लहरी

(viii) भारत सौभाग्य

(ix) प्रयाग रामागमन

(x) संगीत सुधासरोवर

(xi) भारत भाग्योदय

(xii) सूर्य: स्त्रोत

(xiii) बृजचन्द पंचक

प्रताप नारायण मिश्र

प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दु के विचारों और आदर्शों के महान प्रचारक और व्याख्याता थे। वह प्रेम को परम धर्म मानते थे।

हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान" उनका प्रसिद्ध नारा था। समाजसुधार को दृष्टि में रखकर उन्होंने सैकड़ों लेख लिखे हैं। एक सफल व्यंग्यकार और हास्यपूर्ण गद्य-पद्य रचनाकार के रूप में हिन्दी साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है।

मिश्र जी की मुख्य कृतियाँ निम्नांकित हैं-

निबन्ध

प्रताप नारायण मिश्र को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का एडिसन कहा है। इनके मुख्य निबन्धों में धोखा, दाँत, बालक, वृद्ध, आप, बात, खुशामद, भौं, नारी, मनोयोग, मुच्छ, परीक्षा, समझदार की मौत, ह, द, नास्तिक, सोने का डण्डा, अपव्यय, दान हैं।

निबन्ध संग्रह

निबन्ध नवनीत, प्रताप पीयूष, प्रताप समीक्षा।

ठाकुर जगमोहन सिंह

ठाकुर जगमोहन सिंह हिन्दी के भारतेन्दुयुगीन कवि, आलोचक और उपन्यासकार थे।

ठाकुर जगमोहन सिंह ने शृंगार और प्रकृति - सौन्दर्य परक कविताओं की रचना की। इन्होंने विंध्य क्षेत्र की प्रकृति का वैविध्यपूर्ण वर्णन किया हैं।

काव्य संग्रह : प्रेम सम्पत्ति लता (1855), श्याम लता (1885), श्याम सरोजिनी (1886), देवयानी (1886)

उपन्यास : एकमात्र उपन्यास "श्यामास्वप्न"

अम्बिकादत्त व्यास

अम्बिकादत्त व्यास ने अपने कवि जीवन का आरम्भ कविता वर्द्धिनी सभा में 'पूरी अमी की कटोरिया-सी, चिरंजीवी रहौ विक्टोरिया रानी' समस्या की पूर्ति करके किया और उन्हें सुकवि की उपाधि प्राप्त हुई थी।

अम्बिकादत्त व्यास ने खड़ी बोली में 'कंस वध' (अपूर्ण) शीर्षक प्रबन्ध-काव्य की रचना की। साथ ही फारसी छन्द में 'दशरथ विलाप' नामक कविता खड़ी बोली लिखी।